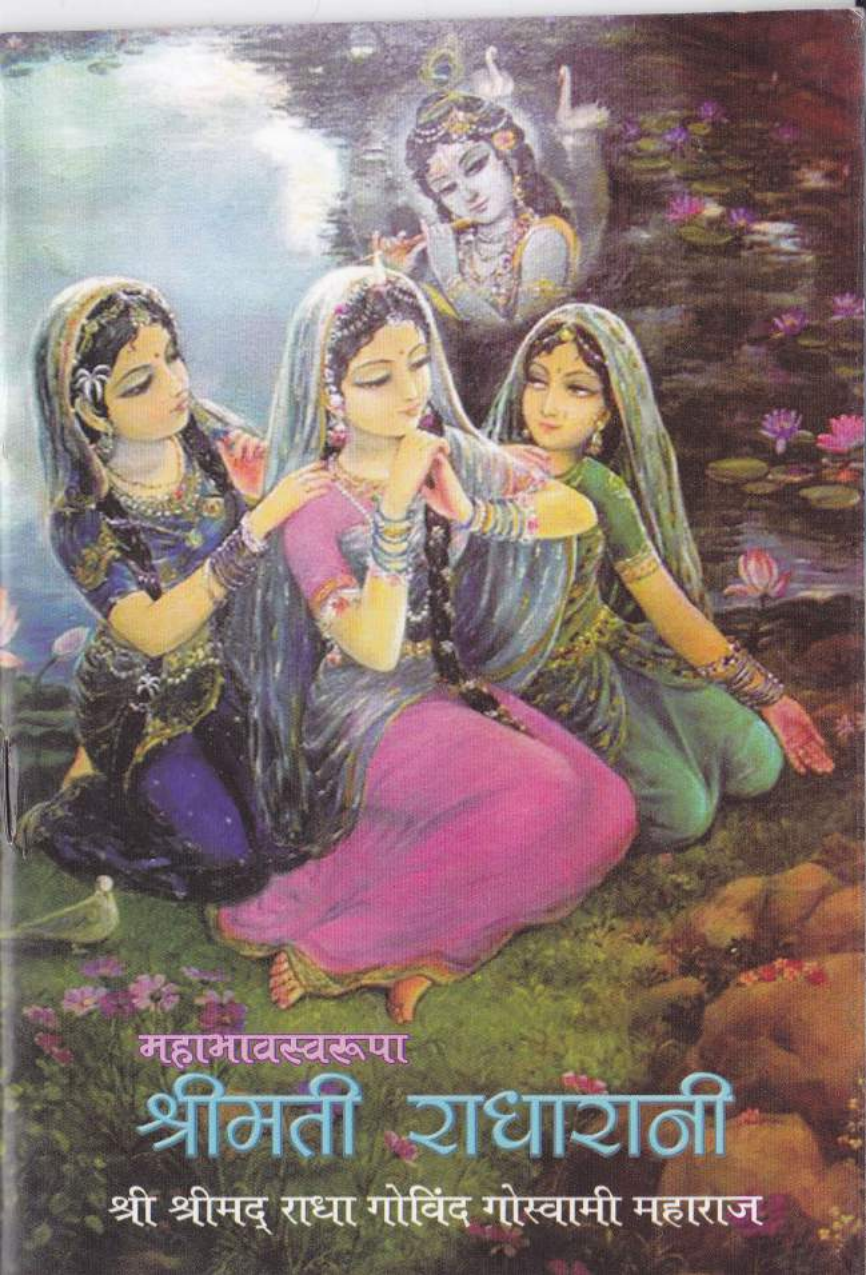

महाभावस्वरूपा

श्रीमती राधारानी

श्री श्रीमद् राधा गोविंद गोस्वामी महाराज

महाभावस्वरूपा

श्रीमती राधारानी

प्रवक्ता

श्री श्रीमद् राधा गोविन्द गोस्वामी महाराज

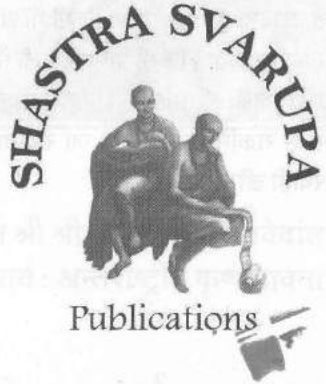

RS 20

इस ग्रंथ की विषयवस्तु में जिज्ञासु पाठकगण निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करने के लिए आमंत्रित है :
शास्त्रस्वरूप पब्लिकेशन्स, बी-४०६, गुलमोहर, गावांड बाग, पोखरण रोड न. २, ठाणे (प), महाराष्ट्र - ४००६१०, भारत |

© २०११ शास्त्रस्वरूप पब्लिकेशन्स, सर्वाधिकार सुरक्षित

शास्त्रस्वरूप पब्लिकेशन्स के लिए भारत और अन्य देशों में वितरक : नैमिषारण्य एन्टरप्राइझेस।

प्रथम मुद्रण, जनवरी २०१० : १००० प्रतियाँ।

द्वितीय मुद्रण, फरवरी २०१० : ५००० प्रतियाँ।

तृतीय मुद्रण, मार्च २०११ : ११००० प्रतियाँ।

प्रतिलेखन : भक्त अजय चेबले
डिजाइन और लेआउट : भक्त मारन

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश को पुनरुत्पादित, प्रतिलिपित नहीं किया जा सकता | किसी प्राप्य प्रणाली में संगृहीत नहीं किया जा सकता अथवा अन्य किसी भी प्रकार से चाहे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपी रिकॉर्डिंग से संक्रमित नहीं किया जा सकता | इस शर्त का भंग करने पर उचित कारवाही की जायेगी |

|| श्री श्री गुरु-गौरांगौ जयतः ||

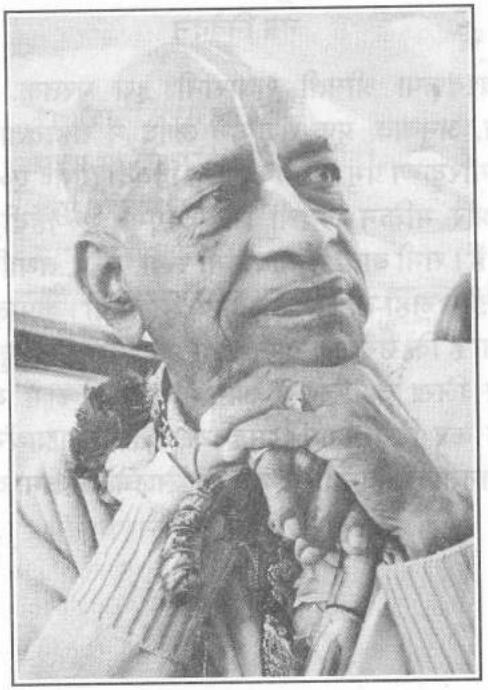

समर्पण

कृष्णकृपाश्रीमूर्ति श्री श्रीमद् ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद
संस्थापकाचार्य : अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ

नम्र निवेदन

'महाभावस्वरूपा श्रीमती राधारानी' इस पुस्तक के पाठ-संशोधन, अनुवाद, प्रूफ-संशोधन आदि में सहायता के लिए श्रीमान् गौरकृष्ण प्रभु, भक्तिन आशा द्विवेदी (एम्० ए०-संस्कृत, हिंदी) और भक्तिन जयश्री सिंह (एम्० ए०-हिंदी) के हम आभारी हैं। सभी बातों में सावधानी रखी गई है, तथापि पुस्तक की छपाई में जहाँ-तहाँ भूलें अवश्य हुई होंगी। कृपालु पाठकों से प्रार्थना है कि उन्हें छपाई में जहाँ भूल दिखाई दे, कृपया हमें व्योरेवार लिख दें, जिससे आगामी संस्करण में यथायोग्य संशोधन कर दिया जाए। सहृदय पाठकों से प्रार्थना है कि असावधानतावश होनेवाली भूलों के लिए वे हमें क्षमा करें।

- प्रकाशक

विषय-सूची

- राधारानी परम सत्य हैं।
- परम महिमामयी श्री राधारानी
- 'तप्त कांचन गौरांग'
- राधारानी का विरह
- श्री गोपांगनाएँ प्रेम का मूर्तिमान स्वरूप हैं।
- 'श्रीकृष्ण ही मेरे प्राणों के नाथ हैं।'
- आनंद समुद्र में बाढ़
- ताड़न-भर्त्सन
- चातक का प्रेम
- श्री वृषभानुनन्दिनी से प्रार्थना

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मामदर्शनान्मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो मत्प्राणनाथस्तु स एव ना परः॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.४७

आश्लिष्य-आलिंगन करके; **वा**-अथवा; **पादरतां**-चरण में लिपटी हुई; **पिनष्टु**-पीस दे, धक्का दे; **माम्**-मुझको; **अदर्शनान्**-मुझसे कभी भेंट न करके; **मर्महतां**-हृदय को दुःखी; **करोतु**-करे; **वा**-अथवा; **यथा तथा**-जैसे उनके मन में आए वैसा; **वा**-अथवा; **विदधातु**-विधान करे; **लम्पटो**-अनेक स्त्रियों से आसक्त; **मत् प्राणनाथः**-मेरे प्राणनाथ; **तु**-तो; **स एव**-वही हैं; **ना**-नहीं; **अपरः**-अन्य कोई |

अनुवाद : "वे मुझे प्रेम से आलिंगन करें या उनके चरणों से जब मैं लिपटूँ तो वे मुझे पैरों की ठोकर से मारें या मुझसे कभी भेंट न करें, दर्शन न दें | इस प्रकार मुझे दुःखी करें अथवा मुझे दिखाकर मेरे सामने ही अन्य गोपियों के साथ क्रीड़ा करें | उनके मन में जो भी इच्छा हो वह करें; किन्तु मेरे प्राणनाथ तो वही हैं | उनका सुख ही मेरा सुख है | मेरे लिए कृष्ण के अतिरिक्त और कोई नहीं है |"

राधारानी परम सत्य हैं।

श्रीमती राधारानी वैष्णव समाज में; विशेष कर निम्बार्क सम्प्रदाय, पुष्टि मार्ग और गौड़ीय सम्प्रदाय में बहुत ही सम्मानित हैं | राधारानी परम सत्य हैं और श्रीकृष्ण की स्वरूपा हैं | श्रीकृष्ण और श्रीराधा में कोई भेद नहीं है, वे दोनों एक ही हैं | लीला के लिए

श्रीकृष्ण ही दो रूपों में बने हुए हैं | श्रीकृष्ण रसराज हैं, रस के मूर्तिमान स्वरूप हैं | भगवान् के बहुत से स्वरूप और लीलाएँ हैं | उनमें से श्रीकृष्ण ही काल के रूप में या स्फूर्णा के रूप में विद्यमान हैं | श्रीमती राधारानी भाव स्वरूपा हैं - महाभावमयी | भाव का अर्थ होता है, भक्ति | इस पूरे अप्राकृत और प्राकृत जगत् में जितनी भी भक्ति है, ये वास्तव में श्री राधारानी का ही स्वरूप प्रकाश है | भक्तों के हृदय में, श्री गोपांगनाओं के हृदय में या लक्ष्मी आदि देवियों के हृदय में जो भी श्रीकृष्ण के प्रति भाव है, वह श्री राधिका के महाभाव का किंचित्-किंचित् प्रकाशन है | राधारानी महाभावस्वरूपा हैं और श्रीकृष्ण रसराज हैं, सर्वश्रेष्ठ रस, अप्राकृत रस |

परम महिमामयी श्री राधारानी

बहुत से महान आचार्यों, भक्तों और सत्कर्मियों ने श्री राधारानी का गुणगान किया है | गुणगान ही नहीं बल्कि श्री ब्रह्मा जी, श्री उद्धव जी जैसे महान पुरुषों ने गोपियों के चरण-रज को पाने की अभिलाषा व्यक्त की है | यदि वह अभिलाषा पूरी होती है तो उस अभिलाषा की पूर्ति से ही वे अपने जीवन को धन्य मानते हैं |
उद्धव जी कहते हैं -

आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां
वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम् |
या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा
भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥

-श्रीमद् भागवतम् १०.४७.६१

"मैं श्री गोपियों के चरण-रज को पाने के लिए यही अभिलाषा करता हूँ कि वृन्दावन में कोई गुल्म-लता, ओषधि या तृण बन जाऊँ | ऐसा होने से गोपांगनाओं के चरणों की धूल मुझपर पड़ेगी और मेरा जीवन सफल हो जाएगा |"

भगवान् के लीला काल में जो सबसे बड़े विद्वान् थे, जो स्वर्ग में बृहस्पति जी से अध्ययन ग्रहण करने गए, ऐसे श्री उद्धव जी भगवान् श्रीकृष्ण के खास सचिव और मित्र हैं | भगवान् ने श्री उद्धव जी को अपनी ओर से ब्रज में गोपांगनाओं को समझाने और उनकी पीड़ा को दूर करने के लिए भेजा था | जब उद्धव जी ने गोपांगनाओं के महाभाव को देखा तब वे उनके चरणों की धूलि में लोटने लगे | उन्होंने परम आनंद के साथ *भ्रमर गीत* के प्रसंग में कई श्लोक गाए हैं | जिन गोपांगनाओं की चरण धूलि पाकर उद्धव जी अपने-आप को धन्य मानते हैं, उन गोपांगनाओं की मुकुट मणि हैं - श्री राधारानी |

सर्वमान्य आचार्य आदि शंकराचार्य जी ने श्री राधारानी और गोपांगनाओं के विषय में सुंदर-सुंदर रचनाएँ लिखी हैं | सभी सम्प्रदाय के लोग, सारे विद्वान्; श्रीपाद् शंकराचार्य जी का आदर करते हैं | इनके अलावा भी श्रीपाद् वल्लभाचार्य, श्रीपाद् निम्बार्काचार्य और साक्षात् स्वयं भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु और उसके साथ ही श्रील सनातन गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी, श्रील रूप गोस्वामी और अन्य बहुत से आचार्यों, कवियों ने गोपियों और राधारानी के भाव की भूरि-भूरि प्रशंसा की है | इन आचार्यों, महान कवियों और परम प्रबुद्ध लेखकों ने श्री राधारानी की महिमा

पर लेख लिखे हैं | ऐसे महान पुरुषों ने राधारानी का गुण गाया है |

श्री राधारानी क्या हैं? उनका भाव श्रीकृष्ण के प्रति क्या है? इसे कहने में तो श्री ब्रह्मा जी और भगवान् शेषनाग भी असमर्थ हैं | उनको तो केवल श्यामसुंदर श्रीकृष्ण ही समझते हैं | वे भी सिर्फ समझते हैं, वर्णन नहीं कर सकते | श्री राधारानी के अद्वितीय महाभाव का केवल श्यामसुंदर ही आस्वादन करते हैं परन्तु उनका वर्णन करने में वे भी असमर्थ हैं | ऐसी परम महिमामयी श्री राधारानी का प्राकट्य दिवस है - राधाष्टमी | राधारानी अपने मूल गाँव बरसाना में नहीं प्रकट हुई | उस समय उनकी माँ उनके ननिहाल, रावल में थी | वहीं पर श्री राधारानी का प्राकट्य हुआ था |

'तप्त कांचन गौरांग'

श्रीचैतन्य महाप्रभु स्वयं कृष्ण हैं; परन्तु भाव उन्होंने राधारानी का लिया है | शरीर की अंग-कांति उनकी अपनी नहीं है | वे गौर वर्ण या पीत वर्ण के हो गए हैं - 'तप्त कांचन गौरांग' | राधारानी के भाव और देह की कांति को स्वीकार कर चैतन्य महाप्रभु कृष्ण के प्रति अपने भाव को व्यक्त कर रहे हैं | *शिक्षाष्टक* के इस श्लोक में श्री राधारानी के उद्गार व्यक्त हुए हैं | इससे चैतन्य महाप्रभु के श्रीकृष्ण के प्रति भाव का पता लगता है |

राधारानी का विरह

एक दिन की बात है, जब प्रिय सखी ललिता ने राधारानी से कहा-

"हे सखी! जब कृष्ण इतने निर्दयी हैं, कठोर हृदय के हैं फिर भी तुम उनसे इतना प्रेम करती हो | देह-धर्म, परिवार-धर्म सबकुछ छोड़कर, तुम कृष्ण पर इतनी आसक्त हो अर्थात् कृष्ण के लिए हमेशा बेचैन रहती हो | वे इतने निर्दयी हैं कि तुमसे भेंट भी नहीं करते, तुम्हारी चर्चा भी नहीं करते | अच्छा होगा कि तुम उन्हें मन से बिसार दो, मन से उनको छोड़ दो, तुम सुखी हो जाओगी |" इस तरह की बात परमप्राण सखी श्री ललिता जी कहती हैं, यह भी एक प्रेम की ही तरंग है | ललिता जी ऐसे थोड़े ही श्यामसुंदर को छोड़ने को कहेगी | राधारानी विरह में बहुत व्याकुल रहती थीं इसलिए उन्होंने ऐसा कहा था | तब राधारानी अपनी प्राणसखी ललिता के बातों का प्रतिकार करते हुए कहती हैं -

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मामदर्शनान्मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो मत्प्राणनाथस्तु स एव ना परः॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.४७

"अरे सखी! श्रीकृष्ण हमें प्रेम से आलिंगन करें, हमें प्रेम से मिलें, प्रिया कहकर हमें गलबाहीं दें अथवा जब मैं उनके चरणों में प्रणाम करूँ या लिपटूँ *पादरताम्*; तब वे मुझे *पिनष्टु* - पैरों की ठोकर से मारें या हमें स्वीकार न करें | यहाँ तक कि मेरे पास कभी न आएँ, मुझसे भेंट न करें और इस प्रकार दर्शन न देकर, विरह की ज्वाला में मुझे दग्ध करें, *मर्महताम्* करें | हे सखी! मैं मानती हूँ कि वे लम्पट हैं, अनेक गोपियों से उनका सम्बन्ध है | मुझे दिखाकर मेरे सामने चंद्रावली आदि अन्य गोपियों के साथ विहार करें या जो

उनके मन में हो वह करें | उनका सुख ही मेरा सुख है | मैं कभी नहीं चाहूँगी कि श्रीकृष्ण मेरे ही साथ रहें | *यथा तथा वा विदधातु लम्पटो* - अनेक गोपियों से संपर्क रखनेवाले श्यामसुंदर जैसा चाहें वैसा करें | पर हे सखी! किसी भी हालत में वे ही हमारे प्राणों के प्राण हैं, हमारे प्राणनाथ हैं | अन्य कोई नहीं है | वे चाहे हमको दर्शन दें या न दें; परन्तु हमें उनकी सेवा करनी है, हमें उन्हें सुखी करना है | हमारे जीवन का यही ध्येय है |" यही है श्री राधारानी और गोपांगनाओं का भाव, जिसमें स्वसुख वासना नहीं है |

श्री गोपांगनाएँ प्रेम का मूर्तिमान स्वरूप हैं।

इस प्राकृत जगत् में प्रेम संभव है ही नहीं | यहाँ जो भी थोड़ा-सा लगाव है, आकर्षण है, वह स्वसुख के लिए है | कुछ ही दिनों में यह तथाकथित प्रेम मिट जाता है | श्री नारद जी बताते हैं कि वास्तविक प्रेम वह है जो विध्वंस का कारण उपस्थित होने पर भी ध्वस्त नहीं होता | प्रेम टूटने के अनेक कारण श्रीकृष्ण ने गोपांगनाओं के सामने उपस्थित किए थे | जैसे - मथुरा बिना किसी बातचीत के चले जाना | लोक में भी गोपियों का तिरस्कार होता था | विध्वंस के अनेक कारण गोपियों के सामने उपस्थित हुए फिर भी उनका भाव कृष्ण के प्रति टूटा नहीं | जो नित्यवर्द्धनशील हो, नित्यनवीन हो और जो बढ़ता ही जाए, यही प्रेम की पहचान है |

आत्मेन्द्रिय-प्रीति-वांछा तारे बलि 'काम'।
कृष्णेन्द्रिय-प्रीति-इच्छा धरे 'प्रेम' नाम॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, आदि-लीला ४.१६५

श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी जी कहते हैं कि, *कृष्णेन्द्रिय-प्रीति-इच्छा धरे 'प्रेम' नाम* - श्रीकृष्ण को सुखी करने की जो कामना है, वांछा है, उसीको प्रेम कहते हैं और *आत्मेन्द्रिय-प्रीति-वांछा तारे बलि 'काम'* अर्थात् अपनी इन्द्रियों को तृप्त करने की जो इच्छा है, उसे 'काम' कहते हैं, प्रेम नहीं कहते |

प्रल्हाद महाराज इसे बनिये का व्यापार कहते हैं | आप बनिये की दुकान पर जाइए तो वह आपको कुर्सी देगा, बैठने के लिए कहेगा, पूछेगा कि आप कुछ खायेंगे-पियेंगे | वह यह सब इसलिए नहीं करता है कि वह आपसे प्रेम करता है, बल्कि इसलिए करता है कि आप उससे कुछ खरीदेंगे, जिससे उसे कुछ मुनाफा होगा | प्रल्हाद महाराज कहते हैं - "जो व्यक्ति प्रतिदान चाहता है, वह भक्त नहीं है, वणिक् है | हे प्रभु! मैं आपकी भक्ति इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि मैं आपसे कुछ लूँ, हमें कुछ नहीं चाहिए | यदि आप हमें वर देना ही चाहते हैं तो यह वर दीजिए कि जिससे हमारे हृदय में कभी-भी कामनाओं का अंकुर उगे ही नहीं |"

श्री गोपांगनाएँ प्रेम का मूर्तिमान स्वरूप हैं | वे कृष्ण को देना चाहती हैं, लेना नहीं | यद्यपि ये बात नहीं हैं कि कृष्ण देते नहीं हैं, वे अनंत प्रतिदान करते हैं | लेकिन फिर भी जितना प्रेम, जितनी सेवा गोपांगनाएँ करती हैं उतनी मात्रा में श्यामसुंदर नहीं कर पाते | वे अपने को ऋणी स्वीकार करते हैं |

न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां
स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः।
या माभजन् दुर्जरगेहश्रृंखलाः
संवृश्च्य तद्वः प्रतियातु साधुना॥

-श्रीमद् भागवतम् १०.३२.२२

श्यामसुंदर कहते हैं - "मैं यदि देवताओं की आयु तक आप लोगों की सेवा करता रहूँ, आपके प्रेम का प्रतिदान करूँ फिर भी मैं समर्थ नहीं हूँ | आप अपने साधु और शुद्ध भाव से ही हमको उऋण कर सकती है अन्यथा हम सदैव आपके ऋणी ही रहेंगे |" यह गोपांगनाओं का सहज भाव है |

'श्रीकृष्ण ही मेरे प्राणों के नाथ हैं।'

श्री राधारानी कहती हैं -

आमि कृष्ण-पददासी तेंहो रससुखराशि,
आलिंगिया करे आत्मसाथ।
किबा ना देय दरशन, जारेन मोर तनुमन,
तबु तेहों मोर प्राणनाथ॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.४८

"हे सखी! मैं कृष्ण के चरणकमल की दासी हूँ - *आमि कृष्ण-पददासी तेंहो रससुखराशि* | मैं जानती हूँ कि श्यामसुंदर रसराज हैं, आनंद के घनीभूत स्वरूप हैं | उनके साथ होना, उनकी सेवा करना, उनसे प्रेम पाना यही सबसे बड़ा सुख है | *आलिंगिया करे आत्मसाथ* - वे मेरा आलिंगन करें, अपने साथ मुझे रखें, गलबाहीं दें; *किबा ना देय दरशन* - अथवा वे मुझे दर्शन न दें | *जारेन*

मोर तनुमन - हमारे तन और मन को विरह की ज्वाला में जला दें; *तबु तेहों मोर प्राणनाथ* - फिर भी श्रीकृष्ण ही मेरे प्राणों के नाथ रहेंगे |"

सखि हे ! शुन मोर मनेर निश्चय !
किबा अनुराग करे, किबा दुख दिया मारे,
मोर प्राणेश्वर कृष्ण अन्य नय॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.४९

"वे हमारे प्राणेश हैं | वे हमारे प्राणों के आनंद दाता हैं | वे मूर्तिमान आनंद और हमारे प्राणों के श्रृंगार हैं | *सखि हे! शुन मोर मनेर निश्चय!* - कभी-कभी मैं अपने प्रियतम के विषय में कहती हूँ कि वे कपटी हैं लेकिन इसका अर्थ ये नहीं हैं कि मैं उनको छोड़ दूँ |" *श्रीचैतन्य चरितामृत* में इस श्लोक की व्याख्या की गयी है |

छाड़ि अन्य नारीगण, मोर वश तनु मन,
मोर सौभाग्य प्रकट करिया।
ता सबारे देय पीड़ा, आमासने करे क्रीड़ा
सेइ नारीगणे देखाइया॥
किबा तेंहो लम्पट, शठ धृष्ट सकपट,
अन्य नारीगण करि साथ।
मोरे दिते मनः पीड़ा, मोर आगे करे क्रीड़ा,
तबु तेंहों-मोर प्राणनाथ॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.५०-५१

"मैं जानती हूँ कि वे लम्पट हैं, शठ धृष्ट हैं, धोखा देने और सुकपट

में अत्यंत प्रवीण हैं | *मोरे दिते मनः पीड़ा, मोर आगे करे क्रीड़ा* - मुझे दुःख देने के लिए मेरे सामने अन्य नारीगणों के साथ वे क्रीड़ा करें अथवा ऐसा भी हो सकता है कि गोपियों को दुःख देने के लिए उनके सामने ही मेरा आलिंगन करें, हमारे साथ विहार करें | जो कुछ भी करें वे हमारे प्राणनाथ हैं |"

श्री राधारानी यहाँ तक कहती हैं कि - "यदि कृष्ण अन्य गोपियों की कामना करते हैं और उस गोपी से उनको सुख मिलता है, तो मैं उसके घर जाऊँगी, उसके पैरों पर गिरुँगी और उसका हाथ पकड़कर उसे कृष्ण के पास लाऊँगी | तभी मेरे प्राणों में उल्हास होगा, मेरे सुख का उल्हास होगा | मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा कि कृष्ण से मुझे सुख मिले | मैं उनको सुख देने के लिए हूँ |"

मोर सुख-सेवने, कृष्णेर सुख-संगमे,
अतएव देह देन दान।
कृष्ण मोरे 'कान्ता' करि, कहे मोरे 'प्राणेश्वरी",
मोर हय 'दासी' अभिमान ॥५९॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.५९

"सखी, मेरा सुख क्या है? कृष्ण की सेवा में ही मेरा सुख है | *कृष्णेर सुख-संगमे* - कृष्ण का सुख मेरे संगम में है | वे मुझे जब आलिंगन करते हैं, मेरे साथ रहते हैं, मैं जानती हूँ कि उन्हें बहुत सुख प्राप्त होता है | *कृष्ण मोरे 'कान्ता' करि, कहे मोरे 'प्राणेश्वरी', मोर हय 'दासी' अभिमान* | कृष्ण मुझे कहते हैं -

"श्रीराधे! तुम मुझे बहुत प्रिय हो | तुम मेरी प्राणेश्वरी हो |" लेकिन मेरे मन में तो यही रहता है कि मैं कृष्ण की दासी हूँ | कृष्ण की सेवा करना ही मेरा सुख है | कृष्ण जिस गोपी को पसंद करते हैं, उसे कृष्ण से मिलाना ही मेरा काम है, सुख है | मैं यही चाहती हूँ कि वे सुखी रहें |" इस विषय में श्री राधारानी उदाहरण देती हैं -

कुष्ठिविप्रेर रमणी, पतिव्रता शिरोमणि,
पति लागि कैला वेश्यार सेवा।
स्तम्भिल सूर्येर गति, जीयाइल मृत पति,
तुष्ट कैल मुख्य तिन देवा॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.५७

यह एक पौराणिक कथा है, जो श्रीचैतन्य महाप्रभु राधा भाव में कह रहे हैं | एक ब्राह्मण की पत्नी, पतिव्रता शिरोमणि थी | उसके पति का शरीर कुष्ठ-रोग से ग्रस्त हो गया था | शरीर से नख गल गया था, जगह-जगह घाव हो गए थे | ऐसे पति के मन में एक बार यह कामना हुई कि गाँव की सबसे सुंदर वेश्या का संग करें | यह आश्चर्य की बात है कि उसे कुष्ठ-रोग है लेकिन कुष्ठ-रोग काम वासना का अंत नहीं करता | किसी भी रोग में यह शक्ति नहीं कि वह काम वासना को नष्ट कर दे | वह ब्राह्मणी पतिव्रता शिरोमणि थी | अपने पति को सुखी करना ही उसके जीवन का ध्येय था| राधारानी कहती हैं - *कुष्ठिविप्रेर रमणी, पतिव्रता शिरोमणि, पति लागि कैल वेश्यार सेवा* - उस पतिव्रता स्त्री ने उस वेश्या के पास विनय किया कि तुम हमारे पति की इच्छा को पूरा करो | वह

परम सुंदरी थी और यह कुरूप कुष्ठ-रोगी ब्राह्मण | उसने साफ मना कर दिया लेकिन यह पतिव्रता स्त्री नित्य ही उस वेश्या की सेवा करती थी | उसका घर-बुहारना, लीपना-पोतना इत्यादि...| वह ब्राह्मणी थी लेकिन वेश्या की सेवा कर रही थी | वेश्या प्रसन्न हो गई लेकिन ब्राह्मणी वेतन के रूप में यही चाहती थी कि वह एक बार उसके पति के साथ संग करे | अगर लोग यह सुनते कि वेश्या ने एक कुरूप कुत्सित रोगी का संग किया है तो अन्य लोग उसे छोड़ देते | इसीलिए उसने कहा कि - "मैं नहीं जाऊँगी, तुम अपने पति को यहाँ ले आओ |" तब ब्राह्मणी अपने पति को कंधे पर उठाकर वेश्या के पास जाने लगी | कोई देख न ले इसलिए वेश्या ने रात में आने को कहा था | उसी समय मार्कण्डेय मुनि को राजा ने सूली पर चढ़ा दिया था | कुछ चोर चोरी करके उनके आश्रम में छिप गए थे | जब राजा के सिपाहियों ने देखा कि चोर आश्रम में छिपे हैं तो उन्होंने मार्कण्डेय मुनि को भी आरोपी समझकर पकड़ लिया जबकि उनको पता भी नहीं था कि चोर उनके आश्रम में छिपे थे | फिर भी उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया | ब्राह्मणी अपने पति को लिए रास्ते में चल रही थी तब उसके पति का पैर ऋषि को छू गया | महात्मा बोले कि, "कौन है? किसने हमको धक्का दिया है?" वे क्रोधित हो गए और उन्होंने कहा कि - "सूर्य के उदय होते ही वह मर जाएगा |" वह ब्राह्मणी अपने पति को सुखी करने के लिए ले जा रही थी और असमय में ही यह शाप मिल गया | उस पतिव्रता स्त्री का हृदय काँप गया और सूर्योदय होने पर उसके पति मर जायेंगे इसलिए उसने अपने पतिव्रत बल का उपयोग किया | उसने कहा कि - "यदि स्वप्न में भी मेरा मन

किसी पुरुष में न गया हो, अपने पति में ही रचा-बसा हो, इन्हीं को सुखी करने का संकल्प रखते हुए और कुछ भी मेरे मन में न हो, तो आज से सूर्योदय नहीं होगा |" एक तरफ एक महात्मा की तपस्या का बल था और दूसरी तरफ एक पतिव्रता सती नारी का | परिणामस्वरूप सूर्योदय नहीं हुआ, चारों तरफ हल्ला हो गया - 'सूर्य नहीं उग रहे हैं... सूर्य नहीं उग रहे हैं... |' हल्ला हो गया कि पतिव्रता नारी ने सूर्य को रोक दिया | सब देवता - ब्रह्मा, भगवान् विष्णु और शंकर जी के पास गए | तब उस पतिव्रता स्त्री के पास तीनों ब्रह्मा, भगवान् विष्णु और शंकर जी आए | उन्होंने कहा कि - "बेटी, सूर्य को उगने दो, तुम्हारा पति मर जाएगा और हम उसे फिर जीवित कर देंगे |" उस पतिव्रता स्त्री ने अपने पतिव्रत धर्म से ब्रह्मा, भगवान् विष्णु और शंकर जी तीनों को प्रसन्न कर दिया | सूर्योदय हुआ और उसका पति मर गया लेकिन तुंरत ही भगवान् ने अपनी कृपा दृष्टि से उसे जीवित कर दिया | सिर्फ जीवित ही नहीं किया बल्कि उसके कुष्ठ-रोग को भी समाप्त कर दिया | वह कुष्ठ-रोगी ब्राह्मण भगवान् की कृपा से सुंदर हो गया | इस प्रकार, पतिव्रत धर्म के बल से ब्राह्मणी ने अपने पति को रोग से मुक्त कर दिया और उसे दीर्घ जीवन प्रदान कर दिया |

आनंद समुद्र में बाढ़

इसके बाद राधारानी कहती हैं -

कृष्ण-मोर जीवन, कृष्ण-मोर प्राणधन,
कृष्ण-मोर प्राणेर पराण।
हृदय उपरे धरों, सेवा करि सुखि करों,
एइ मोर सदा रहे ध्यान॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.५८

"हे सखी! कृष्ण हमारे जीवन हैं, मेरे प्राणधन हैं, हमारे प्राणों के भी प्राण हैं | सदा मेरा ध्यान एकमात्र इसी में रहता है कि किसी तरह से कृष्ण को सुखी करना है |"

कान्त-सेवा-सुख-पूर, संगम हैते सुमधुर,
ताते साक्षी-लक्ष्मी ठाकुराणी।
नारायण हृदि स्थिति, तबु पाद सेवाय मति,
सेवा करे 'दासी'-अभिमानी॥

-श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला २०.६०

कान्त-सेवा-सुख-पूर, संगम हैते सुमधुर, "प्रियतम की सेवा संगम से अतिशय सुमधुर है | कृष्ण का संग मुझे मिले या न मिले, मुझे आलिंगन मिले या न मिले; मुझे इसकी कोई चिंता नहीं है | इसकी अपेक्षा उनकी सेवा में अनंत गुना अधिक सुख है | कान्त की सेवा करने का सौभाग्य मिले यही आनंद समुद्र में बाढ़ के सामान है | *ताते साक्षी-लक्ष्मी ठाकुराणी* - हे सखी! इस बात के

लिए श्री लक्ष्मी जी साक्षी हैं | प्रियतम के साथ उनका संग, आलिंगन नहीं देखा जाता है |"

भगवान् अपने भक्तों से बहुत प्रेम करते हैं | कभी-कभी वे वैकुण्ठ से अवतार लेते हैं | नित्य लीला में वे हमेशा ही लक्ष्मी जी के साथ रहते हैं | शेष शय्या पर भगवान् शयन करते हैं पर लक्ष्मी जी का केवल एक ही काम देखा गया है, वे हमेशा भगवान् की सेवा में ही रहती हैं | कभी-कभी स्फटिक मणि में अपने को देखती हैं | अपना चेहरा दिखाई देने पर लक्ष्मी जी सोचती हैं - "हमारे इसी मुख को भगवान् चूमते हैं |" इससे यह सिद्ध होता है कि भगवान् उनका कभी-कभी आलिंगन करते हैं लेकिन प्रायः यह देखा जाता है कि लक्ष्मी जी हमेशा सेवा में ही रहती हैं | आलिंगन देते हुए बहुत कम और चरण संवाहन करते हुए ज्यादा दिखयी देती हैं | चित्र में हम देखते हैं कि भगवान् के नाभि से निकले हुए कमल पर श्री ब्रह्मा जी बैठे हैं | भगवान् शेष शय्या पर शयन किए हैं और लक्ष्मी जी उनकी चरण सेवा कर रही हैं |

नारायण हृदि स्थिति, तबु पाद सेवाय मति, सेवा करे 'दासी'-अभिमानी - "नारायण ने अपने हृदय पर उनको आसन दिया है | भगवान् लक्ष्मी जी से इतना प्रेम करते हैं लेकिन लक्ष्मी जी भगवान् के वक्षस्थल पर न रहकर चरणों में ही सेवा करती हैं | चरण सेवा में ही उनकी मति लगी रहती है | लक्ष्मी जी अपने-आप को भगवान् की प्रिया नहीं मानती बल्कि भगवान् की दासी मानती हैं | कृष्ण भले ही हमसे प्रेम करें, हमको प्रिया कहें, प्राणेश्वरी कहें; लेकिन *सेवा करे 'दासी'-अभिमानी* - मेरा तो यही भाव रहता है

कि मैं उनकी दासी हूँ |"

ताड़न-भर्त्सन

इसमें प्रश्न उठता है कि कभी-कभी तुम क्यों कृष्ण को कठोर बोलती हो | श्री राधारानी कहती हैं कि - "मैं कभी-कभी कृष्ण पर क्रोध करती हूँ और क्रोध में ताड़न-भर्त्सन भी करती हूँ क्योंकि सखी! मैं जानती हूँ कि इससे हमारे श्यामसुंदर अधिक सुख का अनुभव करते हैं | ताड़न-भर्त्सन करने से, कुछ देर नहीं बोलने से वे अधिक सुख का अनुभव करते हैं, इसीलिए मैं रोष करती हूँ और अल्पसाधन में ही मान त्याग देती हूँ |"

श्यामसुंदर मान को पसंद करते हैं | मान सेवा से प्रेम में वृद्धि होती है लेकिन एक बार राधारानी ने महामान किया था और श्यामसुंदर मनाते-मनाते बिलकुल हार गए |

सूरदास जी ने पद लिखा हैं -

श्री राधे, तबसो तव गुना नाही भयो |

"जितना परिश्रम तुम्हें मनाने में लग रहा है उतना परिश्रम कभी-भी नहीं हुआ है | मैंने हिरण्याक्ष का वध किया, पृथ्वी को रसातल से लाया, फिर भी उतनी मेहनत नहीं लगी जितनी तुम्हें मनाने में लग रही है | मैंने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रल्हाद की रक्षा की, उसमें भी इतनी मेहनत नहीं लगी | जब हमारे भक्त, देवता और दानव समुद्र मंथन कर रहे थे तब मैंने मंदराचल को उठाया था, उस समय भी इतना परिश्रम नहीं हुआ |"

कभी-कभी महामान होता था, तब यह समझना चाहिए कि वह महासुख दान की योजना थी |

चातक का प्रेम

तुलसीदास जी के दोहावली में चातक के प्रेम का उदाहरण आता है | चातक मेघ से प्रेम करता है लेकिन कभी-कभी बादल चातक को पानी नहीं देता तो वह चातक बादल की तरफ देखकर पियू-पियू, प्रियतम-प्रियतम कहता रहता है | चातक बादल से सीधे गिरा हुआ पानी ही पीता है, नहीं तो पीता ही नहीं | यद्यपि पृथ्वी पर सरोवर, समुद्र, नदियाँ भरे पड़े हैं; लेकिन चातक धरती का एक बूँद भी पानी नहीं पीता | वह बादल से इतना प्रेम करता है कि उसी का पानी चाहेगा | कभी-कभी बादल कठोर पत्थर, ओला बरसा देते हैं, उसके पंखों के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं लेकिन फिर भी चातक कभी अन्य जल की कामना नहीं करता |

तुलसीदास जी कहते हैं -

चढ़त न चातक चित कबहुँ प्रिय पयोद के दोष ।
तुलसी प्रेम पयोधि की ताते नाप न जोख ॥

-गोस्वामी तुलसीदासजीरचित दोहावली

चातक के मन में कभी-भी मेघ के प्रति दोष दृष्टि नहीं होती | तुलसीदास जी कहते हैं कि वास्तव में प्रेम पयोधि का न कोई नाप है न जोख | प्रेम समुद्र की कोई थाह नहीं है और न ही कोई उसको तोल सकता है | इस प्राकृत जगत् में प्राकृत पक्षी में भी इस प्रकार का प्रेम देखा जाता है |

मानते हैं | वे ऐसा मानते हैं कि मेरा जीवन धन्य हो गया | ऐसी वृषभानुनन्दिनी की उस दिशा को भी प्रणाम है, जहाँ वे खड़ी हैं | *धन्यातिधन्यपवनेन्* - जब पवन राधारानी के आँचल को छूकर चलता है तो वह पवन भी धन्य है | उसी पवन का स्पर्श पाकर मधुसूदन अपने को कृतार्थ मानते हैं |

यो ब्रह्म-रुद्र-शुक-नारद-भीष्ममुख्यै-
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्योवशीकरण-चूर्णमनन्तशक्तिं
तं राधिका-चरणरेणुमनुस्मरामि॥

-श्री राधासुधानिधि ४

जो भगवान् पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ब्रह्मा, शिव, शुकदेव गोस्वामी, नारद मुनि और भीष्म पितामह जैसे महान पुरुषों द्वारा भी *सहसा न आलक्षित* अर्थात् उनके अभिप्राय को नहीं समझ पाते, उनका दर्शन भी नहीं कर पाते | *सद्योवशीकरण-चूर्णमनन्तशक्तिं* - ऐसे दुर्लभ भगवान् श्यामसुंदर को वश में करने के लिए एक अद्भुत शक्तिवाला चूर्ण है | उसे पाकर श्यामसुंदर भी वश में हो जाते हैं |

वह चूर्ण हैं - *राधिका-चरणरेणु* श्री राधिका चरणरेणु से वे भी वश में हो जाते हैं अर्थात् वे श्री राधारानी के चरणधूलि की कामना करते हैं | *सद्योवशीकरण-चूर्णमनन्तशक्तिं* - श्री राधारानी के चरण रेणु में अनंत शक्ति है | भगवान् को समझ पाना बड़ा कठिन है | बड़े-बड़े संत और महात्मा भी उनके दर्शन नहीं कर

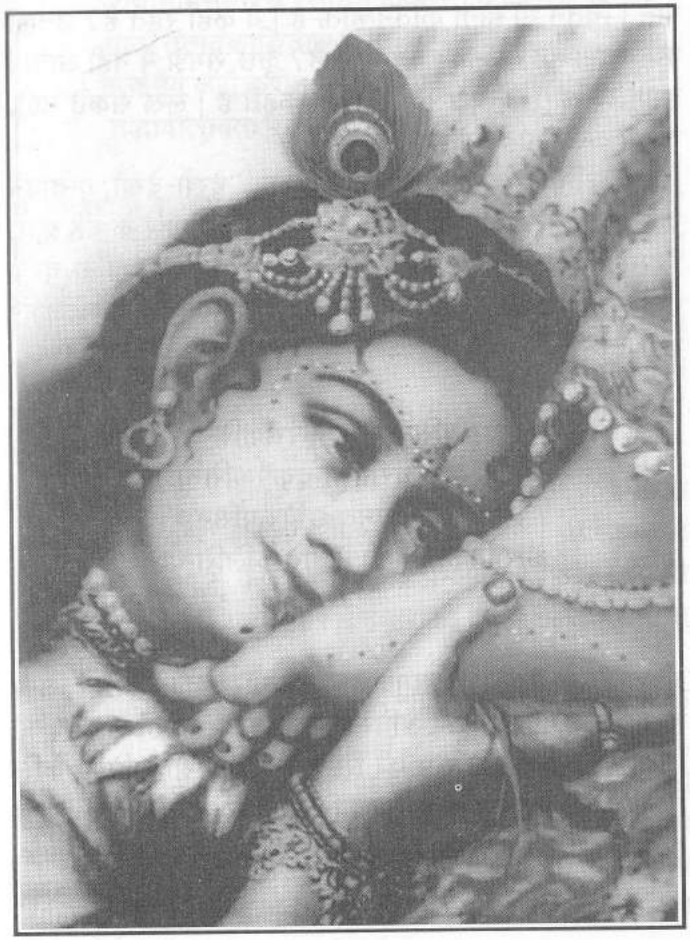

पाते | चिंतन भी होना कठिन होता है | वे कहाँ रहते हैं? उनका क्या स्वभाव है? उनका क्या कर्म है? कुछ समझ में नहीं आता | इसीलिए लोग उन्हें अलख निरंजन कहते हैं | लख सकते नहीं, चिंतन कर ही नहीं सकते |

लेकिन रसखान जी कहते हैं कि, "देखो-देखो, वृन्दावन के कुञ्ज कुटीर में, निधिवन में, सेवा कुञ्ज में, बैठकर के वह ब्रह्म, जिसके विषय में ज्ञान पाना कठिन है; वह श्री राधिका के चरण दबा रहे हैं | देखना हो तो सेवा कुञ्ज में देखो | दुनियाँ में खोजकर क्या करोगे?"

वैदग्ध्यसिन्धुरनुराग-रसैकसिन्धु
र्वात्सल्यसिन्धुरतिसान्द्रकृपैकसिन्धुः।
लावण्यसिन्धुरमृतच्छविरूपसिन्धुः
श्रीराधिका स्फुरतु मे हृदि केलिसिन्धुः॥

-श्री राधासुधानिधि १८

श्री राधारानी वैदग्ध की समुद्र हैं, अनुराग रस की एकमात्र सिन्धु हैं, वात्सल्य की सिन्धु हैं, अतिसान्द्रकृपा की सिन्धु हैं, लावण्य की सिन्धु हैं, अमृत छवि रूप की सिन्धु हैं | ऐसी श्री राधिका केलि सिन्धु हैं जो श्यामसुंदर के साथ नित्यविहार करती रहती हैं | वे हमारे हृदय में स्फुरित हों |

राधानामसुधारसं रसयितुं जिह्वास्तु मे विह्वला
पादौ तत्पदकाङ्कितासु चरतां वृन्दाटवीवीथिषु।
तत्कर्मैव करौ करोतु हृदयं तस्याः पदं ध्यायतात्
तद्भावोत्सवतः परं भवतु मे तत्प्राणनाथे रतिः॥

-श्री राधासुधानिधि १४२

श्री राधारानी के नाम, राधानाम सुधारस को *रसयितुं* पान करने में मेरी जिह्वा हमेशा विह्वल रहे, तत्पर रहे, उत्सुक रहे | हमारी जिह्वा पर हमेशा राधानाम विराजता रहे | *पादौ तत्पदकाङ्कितासु चरतां वृन्दाटवीवीथिषु* - श्री राधारानी ने जहाँ-जहाँ भ्रमण किया हैं, उन्हीं स्थानों में, उन्हीं कुंजों में, गलियों में, वृन्दावन की वीथियों में, हमारे दोनों चरण सदा घूमा करें | *तत्कर्मैव करौ करोतु हृदयं तस्याः पदं ध्यायतात् तद्भावोत्सवतः परं भवतु मे तत्प्राणनाथे रतिः* - हमारे ये हाथ सदा राधारानी की सेवा करते रहें | हृदय में उन्हीं के चरणकमलों का ध्यान रहे | श्री राधारानी के भाव के उत्सव में मेरा हृदय हमेशा प्रभावित रहे और ऐसा ही प्रेम उनके प्राणनाथ श्यामसुंदर में हमारा हो | यही श्री राधारानी से प्रार्थना है |

इस प्रकार *श्री राधासुधानिधि* में श्री राधारानी के विषय में बहुत-सी सुंदर बातें कही गई हैं | रसिक भक्तों को, सुधिजनों को दिव्य ग्रंथों को पढ़ना चाहिए | जिसको पढ़ने से श्री राधारानी की महिमा का कुछ ज्ञान होता है | उनके भाव का दर्शन होता है | विशेषकर के उन महानुभावों वैष्णवों की शरण लेनी चाहिए जिन्होंने श्री श्री राधा श्यामसुंदर को समझा है, उनके बारे में लिखा है एवं बोलते रहते हैं |

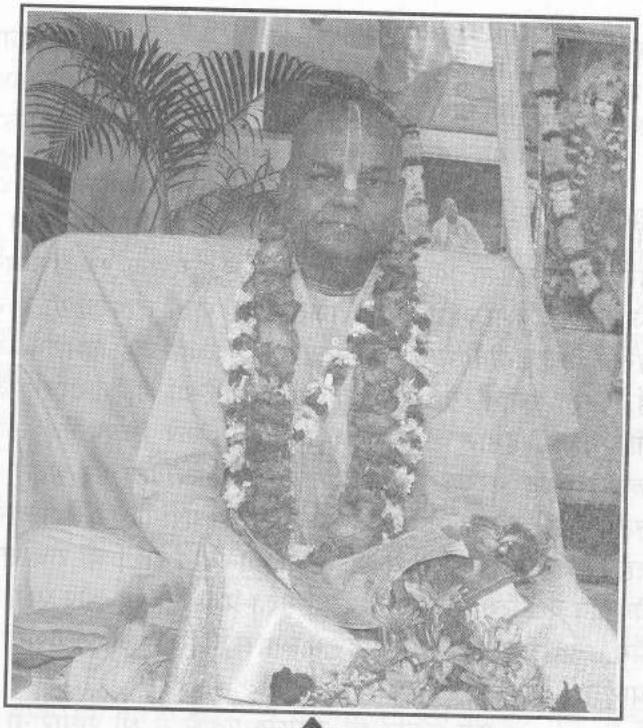

प्रवक्ता

श्रील प्रभुपाद जी के कृपा पात्र शिष्य

श्री श्रीमद् राधा गोविन्द गोस्वामी महाराज

॥ **श्री हरिः** ॥

श्रीमद् भागवत् की आरती

आरति अतिपावन पुरानकी | धर्म-भक्ति-विज्ञान-खानकी ||
महापुरान भागवत निरमल | शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल ||
परमानन्द-सुधा-रसमय-कल | लीला-रति-रस रस-निधानकी || आ.
कलि-मल-मथनि त्रिताप-निवारिनि | जन्म-मृत्युमय भव-भय-हारिनि |
सेवत सतत सकल सुखकारिनि | सुमहौषधि हरि-चरित-गानकी || आ.
विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि | विमल विराग विवेक विकाशिनि |
भगवत्तत्त्व-रहस्य प्रकाशिनि | परम ज्योति परमात्म-ज्ञानकी || आ.
परमहंस-मुनि-मन उल्लासिनि | रसिक-हृदय रस-रास विलासिनि |
भुक्ति, मुक्ति, रति, प्रेम सुदासिनि | कथा अकिञ्चनप्रिय सुजानकी || आ.

अन्य प्रकाशित किताबें

गृहस्थों के सदाचार

हरिनाम -दीक्षा

भक्तवत्सल क्षीर-चोरा गोपीनाथ

पुस्तकों के वितरण से संबंधित अधिक जानकारी के लिए अथवा हमारी किताबों के प्रतिलेखन,अनुवाद संपादन एवं जाँचकार्य जैसी सेवाओं में सहभागी होने के लिए कृपया निम्नलिखित संपर्क सूत्रों पर हमें संपर्क करे

+९१ ९०४५८१८०८२, +९१ ९९८७८१९०८५ .

Web page:

www.facebook.com/ShastrasvarupaPublications

Email : shastrasvarupa@gmail.com

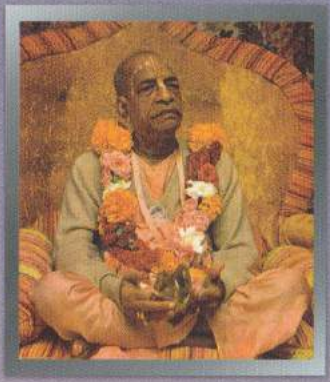

भक्ति की सर्वोच्च प्रतीक श्रीमती राधारानी इतनी शक्तिशाली हैं कि उन्होंने श्रीकृष्ण को खरीद लिया है। इसीलिए वैष्णव जन श्रीमती राधारानी के चरणकमलों की शरण ग्रहण करते हैं, क्योंकि यदि वे यह कहती हैं कि यह उत्तम भक्त है तो कृष्ण को यह स्वीकार करना पड़ता है।

- श्रील प्रभुपाद

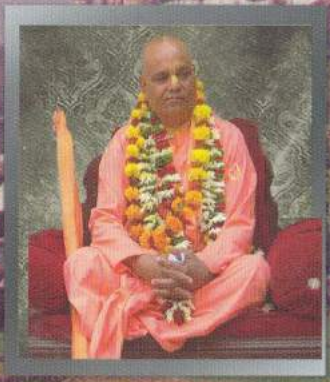

श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं कृष्ण हैं ; परन्तु भाव उन्होंने राधारानी का लिया है। शरीर की अंग-कांति उनकी अपनी नहीं है। वे गौर वर्ण या पीत वर्ण के हो गए हो गए हैं - 'तप्त कांचन गौरांग'। राधारानी के भाव और देह की कांति को स्वीकार कर चैतन्य महाप्रभु कृष्ण के प्रति अपने भाव को व्यक्त कर रहे हैं।

- श्री श्रीमद् राधा गोविन्द गोस्वामी महाराज